अभिव्यक्ति

हिन्दी विभाग, डिगबोई महिला महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित
वार्षिक ई -पत्रिका
अंक-०१, वर्ष -२०२४

संपादना
जैस्मिनआरा पारविन
कीर्ति प्रधान
रिया साहू

हिन्दी विभाग, डिगबोई महिला महाविद्यालय द्वारा
प्रकाशित वार्षिक ई-पत्रिका

अभिव्यक्ति

अंक-०१
वर्ष - २०२४

संपादक
जैस्मिन आरा पारविन
कीर्ति प्रधान
रिया साहू

संपादन-समिति

सलाहकार

डॉ नीतामणि बरदलै

करिश्मा नाथ

चुनचुन कुमारी

प्रियंका शाह

संपादक मंडली

जैस्मिन आरा पारवीन

कीर्ति प्रधान

रिया साहू

सदस्य गण

पूजा रजक

पुष्पा यादव

अनुक्रमणिका

अंधेर नगरी : एक विवेचन रिया साहू

मोहन राकेश कृत आषाढ़ का एक दिन - पूजा रजक

स्कन्दगुप्त नाटक : एक ऐतिहासिक एवं नाटकीय दृष्टिकोण
- - जैस्मिन

औरंगज़ेब की आख़िरी रात एकांकी : एक विश्लेषण -
-कीर्ति प्रधान

पूस की एक रात : ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण
-पुष्पा यादव

Your paragraph text

संपादकीय

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि हमारे हिंदी विभाग की पहली ई-पत्रिका "अभिव्यक्ति" आपके सामने प्रस्तुत है। यह पत्रिका केवल शब्दों का संकलन नहीं है, बल्कि हमारे विचारों, भावनाओं और रचनात्मकता की अभिव्यक्ति का माध्यम है। यह पत्रिका न केवल साहित्य के प्रति हमारी रुचि को दर्शाता है, बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि हम सब मिलकर कैसे कुछ नया और रचनात्मक कर सकते हैं। इस प्रयास में हमारे सभी विद्यार्थियों और आदरणीय गुरुवर का योगदान सराहनीय है। हर लेख, और रचना में उनकी मेहनत और समर्पण झलकता है।

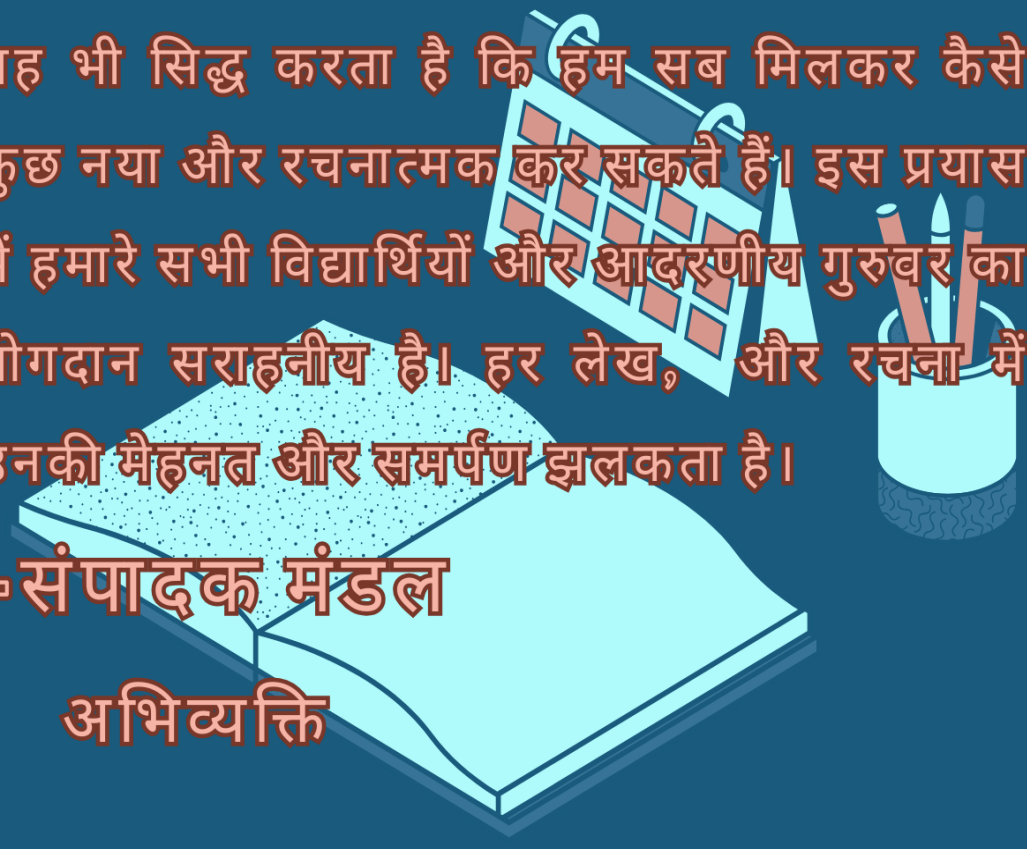

-संपादक मंडल

अभिव्यक्ति

अंधेर नगरी : एक विवेचन

रिया साहू
पंचम छमाही

अंधेर नगरी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध नाटक है, जो समाज में फैली अराजकता, भ्रष्टाचार और मूर्खता पर करारा व्यंग्य करता है। यह नाटक 19वीं सदी के भारत की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर एक गहरी टिप्पणी है, जिसमें न्याय व्यवस्था की विफलता और नेताओं की मूर्खता का चित्रण किया गया है। नाटक के माध्यम से भारतेन्दु ने दिखाया है कि जब राज्य का नेतृत्व अयोग्य हाथों में होता है, तो वहां अराजकता और असमानता का बोलबाला हो जाता है।
कथासार:

नाटक की कहानी एक ऐसे राज्य की है, जहाँ का राजा अराजक और मूर्ख है। इस राज्य में "अंधेर नगरी, चौपट राजा" की कहावत चरितार्थ होती है। वहाँ सब चीज़ों की कीमत एक समान होती है—"टके सेर भाजी, टके सेर खाजा"—यानि महंगी और सस्ती वस्तुएँ एक ही दाम पर बिकती हैं। इस प्रकार की नीति राज्य की आर्थिक स्थिति को बिगाड़ती है, लेकिन राजा और उसके दरबारियों को इसकी कोई चिंता नहीं होती।

इस अराजक राज्य में एक गुरु और उसका चेला पहुँचते हैं। गुरु इस व्यवस्था को देखकर समझ जाता है कि यह जगह उनके लिए सुरक्षित नहीं है, और इसलिए वह चेले से कहता है कि इसे तुरंत छोड़कर कहीं और चलें। लेकिन चेला सस्ती चीजों के लालच में गुरु की बात को नजरअंदाज कर अंधेर नगरी में ही रहना चाहता है।

इसी बीच एक घटना घटती है, जिसमें एक दीवार गिरने से एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। न्याय प्रक्रिया में दोषी की खोज शुरू होती है, और नाटक में हास्यास्पद तरीके से एक के बाद एक लोगों को दोषी ठहराया जाता है। अंत में यह तय होता है कि किसी को फांसी दी जानी चाहिए, और चेला उस मूर्खतापूर्ण व्यवस्था का शिकार बन जाता है।

जब चेले को फांसी पर चढ़ाने की बारी आती है, तब गुरु समय पर पहुँचता है और राजा को अपनी चालाकी से मना लेता है कि चेला नहीं, बल्कि राजा को खुद फांसी पर चढ़ना चाहिए, क्योंकि यह समय और स्थिति बहुत शुभ है। राजा अपनी मूर्खता में गुरु की बात मान लेता है और फांसी पर चढ़ जाता है, जिससे अराजक शासन का अंत हो जाता है।

मुख्य विषय:

अराजक शासन:
नाटक "अंधेर नगरी" का सबसे प्रमुख विषय एक अराजक और असंवेदनशील शासन का चित्रण है, जहाँ शासन की नीतियाँ तर्कसंगत नहीं होतीं। राजा का मूर्खतापूर्ण निर्णय और व्यवस्था राज्य की दुर्दशा का कारण बनते हैं। भारतेन्दु ने दिखाया है कि जब नेतृत्व अज्ञानी होता है, तो समाज में असंतुलन और अराजकता पैदा होती है।

मूर्खता पर व्यंग्य:
"टके सेर भाजी, टके सेर खाजा" जैसी नीतियाँ न केवल राज्य की आर्थिक स्थिति को नष्ट करती हैं, बल्कि यह भी दर्शाती हैं कि एक मूर्ख राजा अपने राज्य को कैसे बर्बाद कर सकता है। इस तरह की समान मूल्य नीति पूरी तरह से अव्यवहारिक है, और यह बताती है कि जब निर्णय मूर्खतापूर्ण होते हैं, तो पूरे राज्य का पतन निश्चित है।

न्याय व्यवस्था की विफलता:
नाटक में हास्य का एक प्रमुख स्रोत न्याय प्रक्रिया है, जो पूरी तरह से विफल है। दोषी की पहचान करने में न्यायालय का तरीका अव्यवस्थित और मूर्खतापूर्ण है। हर बार किसी नए व्यक्ति को दोषी ठहराया जाता है, और अंततः पूरी प्रक्रिया बेमानी साबित होती है।

धार्मिक और नैतिक शिक्षा:
नाटक के अंत में गुरु की चालाकी और ज्ञान ही चेले को बचाने में मदद करता है। यह संदेश देता है कि लालच और मूर्खता के आगे ज्ञान और विवेक ही सफलता का मार्ग है। गुरु और चेले के संवादों में व्याप्त हास्य और व्यंग्य के बावजूद, नाटक का अंत हमें एक गहरी नैतिक शिक्षा देता है।

निष्कर्ष:

अंधेर नगरी एक ऐसा नाटक है जो अपने सरल कथानक और हास्य के माध्यम से गहरे सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर टिप्पणी करता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इस नाटक के माध्यम से न केवल अराजकता और मूर्खता की आलोचना की है, बल्कि यह भी दर्शाया है कि कैसे एक जागरूक और बुद्धिमान व्यक्ति इस तरह की अराजक परिस्थितियों में भी सुरक्षित रह सकता है। नाटक आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह सत्ता और नेतृत्व के प्रति हमारी सोच को चुनौती देता है।

मोहन राकेश कृत आषाढ़ का एक दिन

पूजा रजक
पंचम छमाही

आषाढ़ का एक दिन मोहन राकेश द्वारा रचित हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण नाटक है, जो आधुनिक हिंदी नाट्य साहित्य के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है। यह नाटक 1958 में प्रकाशित हुआ था और इसे हिंदी नाट्य साहित्य में एक नयी धारा के प्रवर्तक के रूप में देखा जाता है। यह नाटक मुख्य रूप से प्रसिद्ध संस्कृत कवि कालिदास के जीवन पर आधारित है, लेकिन यह ऐतिहासिक घटनाओं से अधिक मानवीय और भावनात्मक पक्ष को प्रस्तुत करता है। नाटक में कालिदास के व्यक्तिगत जीवन, प्रेम, और रचनात्मकता के संघर्ष को दिखाया गया है।

कथानक:

नाटक तीन अंकों में विभाजित है और मुख्य पात्रों में कालिदास, मल्लिका और प्रियंगुमंजरी हैं। मल्लिका कालिदास की प्रेमिका है और उसके लिए उसका जीवन और भावनाएं समर्पित करती है, जबकि प्रियंगुमंजरी एक रानी है, जो कालिदास को अपने दरबार में बुलाती है। नाटक में कालिदास का रचनात्मक यात्रा और प्रेम त्रिकोण के बीच का द्वंद्व दिखाया गया है।

मुख्य विषय: प्रेम और त्याग: मल्लिका का प्रेम सच्चा और निस्वार्थ है, जबकि प्रियंगुमंजरी के प्रेम में सत्ता और महत्वाकांक्षा शामिल है।

रचनात्मकता और समाज: कालिदास का अपने साहित्यिक कार्यों के प्रति समर्पण और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी के बीच का संघर्ष।

भावनात्मक द्वंद्व: नाटक के पात्रों के अंदरूनी संघर्ष और उनके भावनात्मक द्वंद्व को बहुत सुंदरता से चित्रित किया गया है।

शैली : मोहन राकेश ने इस नाटक में अत्यंत सहज और सजीव भाषा का प्रयोग किया है, जो पात्रों के भावों और परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करती है। पात्रों की बातचीत और उनका भावनात्मक गहराई से जुड़ा संवाद इस नाटक की सबसे बड़ी विशेषता है।

आषाढ़ का एक दिन ने हिंदी नाट्य साहित्य में एक नई धारा की शुरुआत की और इसने भारतीय नाट्य परंपरा को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया।

प्रमुख विशेषताएँ:

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: नाटक प्राचीन भारत के सांस्कृतिक और साहित्यिक परिदृश्य को प्रस्तुत करता है, खासकर उस दौर को जब कालिदास ने अपने महान काव्य लिखे।

वैयक्तिक संघर्ष: नाटक कालिदास के वैयक्तिक संघर्षों को दर्शाता है, जो न केवल एक महान कवि थे, बल्कि एक साधारण व्यक्ति भी थे, जिन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

प्रकृति का चित्रण: मोहन राकेश ने प्रकृति के माध्यम से नाटक में भावनाओं का सुंदर चित्रण किया है। आषाढ़ का मौसम, बारिश और प्राकृतिक परिवेश, सभी पात्रों की आंतरिक मनःस्थितियों को प्रकट करते हैं।

स्कन्दगुप्त नाटक: एक ऐतिहासिक एवं नाटकीय दृष्टिकोण

जैस्मिन आरा पारवीन
पंचम छमाही

स्कन्दगुप्त नाटक भारत के प्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक उत्कृष्ट नाटक है। यह नाटक भारतीय इतिहास के महान गुप्त सम्राट स्कन्दगुप्त के जीवन और उनके वीरता पर आधारित है। प्रसाद ने इस नाटक में राष्ट्रभक्ति, संघर्ष, राजनीति, और व्यक्तिगत जीवन की भावनाओं को गहराई से चित्रित किया है।

नाटक की पृष्ठभूमि:

गुप्त वंश का शासन काल भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है। स्कन्दगुप्त, गुप्त साम्राज्य के सम्राट थे जिन्होंने हूणों के आक्रमण से अपने साम्राज्य की रक्षा की। यह नाटक उसी ऐतिहासिक घटना को आधार बनाता है, जहाँ सम्राट स्कन्दगुप्त न केवल विदेशी आक्रमणकारियों से अपने राष्ट्र की रक्षा करते हैं, बल्कि आंतरिक संघर्षों से भी जूझते हैं।

मुख्य पात्र:

स्कन्दगुप्त : नाटक का केंद्रीय पात्र और महान गुप्त सम्राट। वह एक साहसी योद्धा, कुशल शासक और राष्ट्रभक्त हैं।

विद्याधरी : स्कन्दगुप्त की प्रेमिका, जो प्रेम और कर्तव्य के बीच के द्वंद्व का प्रतीक है।

मालविका : नाटक की अन्य प्रमुख महिला पात्र, जो स्कन्दगुप्त से प्रेम करती है।

चाणक्य : यहाँ वह गुप्त साम्राज्य का मार्गदर्शक और नीतिज्ञ के रूप में चित्रित हैं, जिन्होंने राजनीति और कूटनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विषय-वस्तु:

स्कन्दगुप्त नाटक मुख्य रूप से राष्ट्र की रक्षा, व्यक्तिगत बलिदान, और राजनैतिक षड्यंत्रों को चित्रित करता है। नाटक में स्कन्दगुप्त का मुख्य उद्देश्य हूणों से अपने देश की रक्षा करना है। इसी के साथ, नाटक में व्यक्तिगत संघर्ष भी देखने को मिलता है, जहाँ स्कन्दगुप्त को अपने प्रेम और कर्तव्य के बीच चुनाव करना पड़ता है।जयशंकर प्रसाद ने स्कन्दगुप्त के चरित्र को बहुआयामी रूप में प्रस्तुत किया है। स्कन्दगुप्त केवल एक योद्धा नहीं है, बल्कि वह एक संवेदनशील और दार्शनिक विचारधारा का प्रतिनिधित्व भी करता है। उनका व्यक्तित्व कर्तव्यपरायणता, त्याग, और राष्ट्रप्रेम से भरा हुआ है, जो उन्हें एक आदर्श नायक बनाता है।

नाटक की विशेषताएँ:

भव्यता और काव्यात्मकता: प्रसाद का लेखन शैली अत्यंत काव्यात्मक और गहन है। संवाद और दृश्य भव्यता से परिपूर्ण हैं, जिससे नाटक में एक अलंकारिक सौंदर्य उत्पन्न होता है।

ऐतिहासिकता और कल्पना का संतुलन: इस नाटक में प्रसाद ने ऐतिहासिक तथ्यों और कल्पना का अद्भुत संतुलन स्थापित किया है। यद्यपि यह नाटक ऐतिहासिक पात्रों पर आधारित है, लेकिन प्रसाद ने इसे अपनी कल्पना के माध्यम से सजीव और नाटकीय रूप दिया है।

राष्ट्रप्रेम और त्याग :

नाटक का मुख्य संदेश राष्ट्र के प्रति समर्पण और कर्तव्य का महत्व है। स्कन्दगुप्त की वीरता और त्याग आज भी प्रेरणादायक हैं।

समापन:

स्कन्दगुप्त नाटक न केवल एक ऐतिहासिक गाथा है, बल्कि यह उस समय के समाज, राजनीति, और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं का भी चित्रण करता है। जयशंकर प्रसाद ने इसे नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करके इसे साहित्य की एक अमूल्य कृति बना दिया है। यह नाटक राष्ट्रभक्ति, कर्तव्य और व्यक्तिगत संघर्ष के साथ-साथ सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का भी प्रभावशाली चित्रण करता है, जो आज भी प्रासंगिक है।

औरंगज़ेब की आख़िरी रात एकांकी : एक विश्लेषण

- कीर्ति प्रधान
पंचम छमाही

औरंगज़ेब, जो मुग़ल साम्राज्य के सबसे विवादास्पद शासकों में से एक थे, अपने शासनकाल के अंत में बेहद कठिनाइयों और असुरक्षा का सामना कर रहे थे। औरंगज़ेब की आख़िरी रात एकांकी उनके जीवन के उसी चरण को प्रस्तुत करती है, जब वह अपनी अंतिम रात बिता रहे हैं। इस एकांकी का केंद्र बिंदु न केवल औरंगज़ेब के जीवन के आखिरी क्षण हैं, बल्कि उनकी जीवन यात्रा, आत्म-विश्लेषण और उनके शासन की विफलताओं का भी विश्लेषण है।

कथानक

एकांकी का आरंभ उस समय से होता है जब औरंगज़ेब अपनी अंतिम रात बिता रहे हैं। उनके सामने उनके पूरे जीवन की घटनाएं उभरकर आती हैं। एकांत में बैठे हुए, वह अपने कार्यों और उनके परिणामों पर विचार करते हैं। उन्हें अपने कठोर फैसलों, धार्मिक कट्टरता, अपने भाइयों के साथ संघर्ष और अपने परिवार में फैली दरारों की याद सताती है।

इस एकांकी में औरंगज़ेब का आत्म-संवाद मुख्य है। वह अपने फैसलों पर पछताते दिखते हैं, खासकर दारा शिकोह की हत्या, शिवाजी के खिलाफ युद्ध और अपनी धार्मिक नीति के कारण साम्राज्य में बढ़ते असंतोष पर। वह सोचते हैं कि उनके द्वारा किए गए निर्णयों ने न केवल उनके जीवन को, बल्कि पूरे मुगल साम्राज्य को कैसे प्रभावित किया।

प्रमुख विचारधारा

यह एकांकी औरंगज़ेब की जीवन यात्रा के अंतर्द्वंद्व को सामने लाती है। अपने शासनकाल के अंत में वह खुद को असफल मानते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने राजत्व में कट्टरता और अत्याचार का सहारा लिया। एकांकी इस बात पर ध्यान केंद्रित करती है कि सत्ता और कट्टरता का मेल किसी भी शासक के लिए विनाशकारी हो सकता है।

प्रतीकात्मकता और सन्देश

औरंगज़ेब की आख़िरी रात में समय का गुजरना और औरंगज़ेब की अंतिम यात्रा एक गहरे प्रतीक के रूप में सामने आती है। यह इस तथ्य को दर्शाती है कि समय सब कुछ बदल देता है और किसी भी शासक के अंत में केवल उनके कर्मों का ही हिसाब रह जाता है। औरंगज़ेब का पछतावा इस बात का प्रतीक है कि सच्ची महानता केवल सत्ता में नहीं, बल्कि उदारता, समझ और मानवता में होती है।

निष्कर्ष:

इस एकांकी के माध्यम से लेखक ने औरंगज़ेब के जीवन के अंतिम क्षणों में उनके संघर्ष और आत्मनिरीक्षण को गहराई से प्रस्तुत किया है। यह एक ऐतिहासिक एकांकी होते हुए भी, मानव स्वभाव और सत्ता के साथ आने वाली जिम्मेदारियों के गहन संदेश को प्रस्तुत करती है।

पूस की एक रात: ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण

-पुष्पा यादव
पंचम छमाही

मुंशी प्रेमचंद की कहानी पूस की एक रात हिंदी साहित्य की एक अनमोल कृति है, जो भारतीय ग्रामीण जीवन की दारुण स्थिति और गरीब किसान की दुर्दशा का सजीव चित्रण करती है। इस कहानी में प्रेमचंद ने आर्थिक तंगी, सामाजिक असमानता और कड़ी मेहनत के बावजूद नसीब के खिलाफ संघर्ष कर रहे किसानों की स्थिति को बड़ी कुशलता से उभारा है।

कहानी का मुख्य पात्र हल्कू, एक गरीब किसान है, जो हर साल खेती की उम्मीद से कर्ज लेता है, लेकिन बदले में उसे सिर्फ गरीबी और तंगहाली ही मिलती है। हल्कू की जीवन स्थिति इतनी दयनीय है कि उसे ठंड में एक नई चादर खरीदने के बजाय पुराना कर्ज चुकाना पड़ता है। हल्कू के पास गर्म कपड़े नहीं हैं, और उसे कड़ाके की ठंड में खेत की रखवाली करनी पड़ती है। पूस की ठिठुरती रात में हल्कू की हालत और उसकी ठंड से लड़ाई असहनीय हो जाती है, जिसके चलते अंत में वह अपनी खेती से हार मान लेता है और कहता है, "अब खेती नहीं करेंगे, अब मजूरी करेंगे।"

हल्कू का यह कथन उसकी असहायता और टूटे हुए सपनों का प्रतीक है। यह सिर्फ हल्कू की नहीं, बल्कि उन सभी किसानों की कहानी है जो कड़ी मेहनत करने के बाद भी अपनी बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं कर पाते। कहानी में प्रेमचंद ने समाज की उस सच्चाई को उजागर किया है, जहाँ किसान अपनी जरूरतों और कर्ज के बोझ तले दबे रहते हैं।

इस कहानी में जानवरों का चित्रण भी महत्वपूर्ण है। हल्कू का कुत्ता जबरा उसकी गरीबी और संघर्ष का साथी है। जबरा की वफादारी और उसकी ठंड से लड़ने की कोशिशें मानवीय भावनाओं को और भी गहरा बना देती हैं। जबरा का साथ भी हल्कू की विपदा को पूरी तरह दूर नहीं कर पाता, लेकिन यह उसके जीवन का एक मात्र सहारा बनता है।

कहानी में प्रकृति का वर्णन भी बेहतरीन ढंग से किया गया है। पूस की कड़ाके की ठंड, रात की खामोशी और ठिठुरन भरे माहौल का चित्रण इतना जीवंत है कि पाठक खुद को हल्कू की परिस्थिति में महसूस करता है। प्रेमचंद ने अपनी सरल और सहज भाषा के माध्यम से गाँवों की वास्तविकता और किसानों की त्रासदी को दिल को छू लेने वाले अंदाज में पेश किया है।

निष्कर्ष:

पूस की एक रात प्रेमचंद की उन कहानियों में से है जो पाठकों के दिलों में गहरी छाप छोड़ती है। यह कहानी सिर्फ एक किसान की दुर्दशा का चित्रण नहीं है, बल्कि उस सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था पर एक तीखा व्यंग्य है जो गरीबों की हालत सुधारने में विफल रही है।

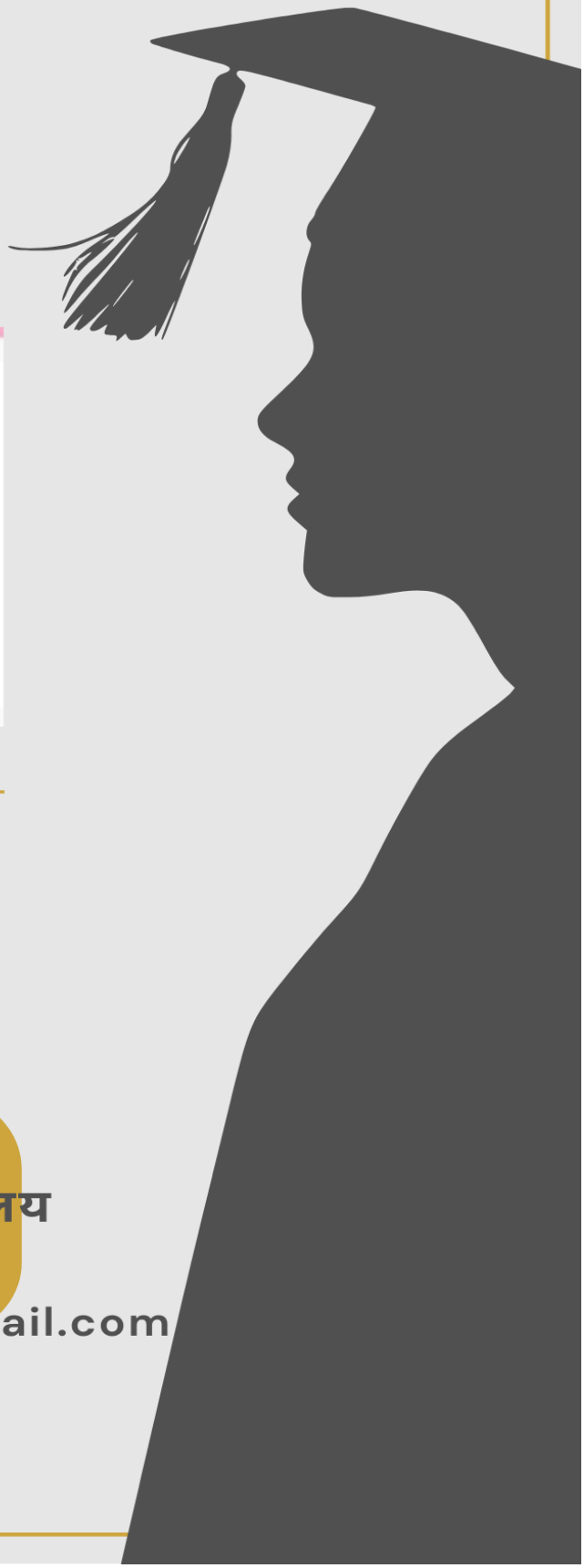

संपर्क सूत्र

हिन्दी विभाग,

डिगबोई महिला महाविद्यालय

ईमेल :

hindidepartment.dmm@gmail.com